UG/I/HIN/H/II/16(New)

2016

HINDI

[Honours]

PAPER – II

Full Marks : 90

Time : 4 hours

The figures in the right hand margin indicate marks

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable

Illustrate the answers wherever necessary

[NEW SYLLABUS]

1. निम्नलिखित में से किन्हीं *दो* प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 15 × 2

   (*क*) कबीर की भक्ति-भावना पर विचार कीजिए ।

   (*ख*) 'सूरदास का वियोग-वर्णन हिन्दी साहित्य में अद्वितीय है' — कथन की विवेचना उदाहरण सहित कीजिए ।

(*ग*) समन्वयवादी कवि के रूप में तुलसीदास का मूल्यांकन कीजिए ।

(*घ*) रीतिकाव्य के प्रवर्त्तक आचार्य के रूप में केशवदास का महत्त्व निरूपित कीजिए ।

(*ङ*) घनानंद की विरह-भावना पर विचार कीजिए ।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं *चार* की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 8 × 4

(*क*) साधो, देखी जग बौराना ।
साँची कहौ तौ मारण धावै झूठे जग पतियाना ।
हिंदू कहत है राम हमारा मुसलमान रहमाना ।
आपस मैं दोऊ लड़े मरतु हैं मरम कोइ नहिं जाना ।
बहुत मिले मोहिं नेमी धर्मी प्रात करैं असनाना ।
आतम-छोड़ि पषानै पूजैं तिनका थोथा ज्ञाना ।
आसन मारि डिभ धरि बैठे मन में बहुत गुमाना ।
पीपर-पाथर पूजन लागे तीरथ-बर्त भुलाना ।
माला पहिरे टोपी पहिरे छाप-तिलक अनुमाना ।
साखी सब्दै गावत भूले आतम खबर न जाना ।

(*ख*) चढ़ा असाढ़ गगन घन गाजा । साजा बिरह दुंद दल बाजा ।।
धूम, साम, धौरे घन धाए । सेत धजा बग पाँति देखाए ।।
खड़ग बीजु चमकै चहुँ ओरा । बुंद बान बरसहिं घन घोरा ।।
ओनई घटा आइ चहुँ फेरी । कंत ! उबारू मदन हौं घेरी ।।

दादुर मीर कोकिला, पीऊ । गिरै बीजु, घट रहै न जीऊ ।।
पुष्य नखत सिर ऊपर आवा । हौं बिनु नाह, मंदिर को छावा?
अद्रा लाग लागि भुइँ लेई । मोहि बिनु पिउ को आदर
देइ ? ।।

जिन्ह घर कंता ते सुखी, तिन्ह गारौ औ गर्ब
कंत पियाश बाहिरै, हम सुख भूला सर्ब ।

(ग) बिनु गोपाल बैरनि भईं कुंजैं ।
तब ये लता लगति अति सीतल, अब भईं विषम ज्वाल
की पुंजैं ।।
बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल फूलैं,
अलि गुंजै ।
पवन पानि घनसार संजीवनि दधिसुत किरन भानु भईं भुंजै ।
ए, ऊधो, कहियो माधव सों बिरह कदन करि मारत लुंजै ।
सूरदास प्रभु को मग जोवत अँखियाँ भईं बरन ज्यों गुंजै ।।

(घ) मेरी भव-बाधा हरौ राधा नागरि सोइ ।
जा तन की झाईं परे स्यामु हरित-दुति होइ ।।
तजि तीरथ, हरि-राधिका-तन-दुति करि अनुरागु ।
जिहिं ब्रज-केलि-निकुंज-मग पग-पगु होतु प्रयागु ।।

(ङ) ए रे वीर पौन ! तेरो सबै ओर गौन, बोरी,
तो सो और कौन, मनैं ढरकौ हीं बानि दै ।
जगत के प्रान, औछे बड़े सों समान घन-
आनंद निधान, सुखदान दुखियानी दै ।

जान उजियारे गुन-भारे अंत मोही प्यारे,
अब हवै अमोही बैठे पीठि पहिचानि दै ।
बिरह बिथाहि मूरि आँखिन मैं राखौ पूरि
धूरि तिन पायनि की हाहा ! नैकु आनि दै ।

(च) इन्द्र जिम जंभ पर बाड़व सुअंभ पर
रावन सदंभ पर रघुकुलराज है ।
पौन बारिबाह पर संभु रतिनाह पर
ज्यों सहसबाह पर राम द्विजराज है ।
दावा द्रुम दंड पर चीता मृगझुंड पर
भूषन वितुंड पर जैसे मृगराज है ।
तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर
त्यों मलिच्छ बंस पर सेर सिवराज है ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1 × 8

(क) 'बोली हमरी पूरबी' — किस कवि का कथन है ?

(ख) नागमती किसके वियोग में दुखी है ? नाम लिखिए ।

(ग) साँवरे-से सखि ! रावरे को है ? — कौन किससे पूछती हैं ?

(घ) किस कवि को 'भाषा प्रवीन' कहा गया है ?

(ङ) 'रसिकप्रिया' के रचयिता का नाम लिखिए ।

(च) बिहारी का जन्म कहाँ हुआ था ?

(छ) 'शिवाबावनी' किसकी रचना है ?

(ज) 'सूरदास' कृत किसी एक रचना का नाम लिखिए ।

4. किन्हीं *पाँच* पर टिप्पणी लिखिए : 4 × 5

(क) कबीर की भाषा

(ख) सूरदास की वात्सल्य भावना

(ग) तुलसीदास की भक्ति-भावना

(घ) बिहारी के दोहों की विशेषता

(ङ) घनानंद का प्रेम-वर्णन

(च) भूषण की राष्ट्रीय चेतना

(छ) केशवदास का सामान्य परिचय

(ज) नागमति का वियोग-वर्णन ।